शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2023
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

# महादेवी वर्मा का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

डॉ सुनीता सिंह मरकाम
सहायक प्राध्यापक (हिन्दी)
शास. इंदिरा गाँधी गृह विज्ञान कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय
शहडोल, मध्यप्रदेश, भारत

छायावाद के चार आधार स्तंभों में शामिल, वेदना की कवयित्री महादेवी वर्मा का जन्म 26 मार्च 1907 को होली के दिन फरुखाबाद (उत्तर प्रदेश) में हुआ था। आपकी प्रारंभिक शिक्षा मिशन स्कूल, इंदौर में हुई। 1924 में आपने हाईस्कूल की परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त किया। महादेवी वर्मा 1929 में बौद्ध दीक्षा लेकर भिक्षुणी बनना चाहती थीं, लेकिन महात्मा गाँधी के संपर्क में आने के बाद आप समाज सेवा में लग गई। कॉलेज के समय इनकी मित्रता वीर रस की कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान से हुई। सन 1933 में आपने इलाहबाद विश्वविद्यालय से एम.ए. पास किया, तभी इनकी दो कविताएं भी प्रकाशित हो चुकी थी। इस तरह इनका विद्यार्थी जीवन सफल रहा। इसके पश्चात् आपने नारी शिक्षा प्रसार के मंतव्य से प्रयाग महिला विद्यापीठ की स्थापना की। वे प्रधानाचार्य के रूप में कार्यरत रहीं। मासिक पत्रिका 'चाँद' का अवैतनिक संपादन किया। आधुनिक हिंदी साहित्य जगत में उन्हें आधुनिक मीरा के नाम से भी जाना जाता है। कवि निराला ने उन्हें हिंदी के विशाल मंदिर की सरस्वती भी कहा है।

कितनी करुना कितने सन्देश
पथ में बिछ जाते बन पराग
गाता प्राणों का तार-तार
अनुराग भरा उन्माद राग
आंसू लेते वे पथ पखार
जो तुम आ जाते एक बार।

साहित्य जगत में तारिका की तरह दीप्त महादेवी वर्मा का व्यक्तित्व बहुत कुछ सूक्ष्म और गहरी रेखाओं में निर्मित हुआ है। उनके व्यक्तित्व में जहाँ एक ओर रहस्य, दर्शन और सौन्दर्यमय पीड़ा के तत्व मिलते हैं। महादेवी ने लिखा है "सुख और दुःख के धूपछाहीं डोरों से बने हुए जीवन में मुझे केवल दुःख ही गिनते रहना प्रिय है। यह बहुत से लोगो के आश्चर्य का कारण है। संसार जिसे दुःख और अभाव के नाम से जानता है, वह मेरे पास नहीं। जीवन में मुझे बहुत दुलार, बहुत आदर और बहुत मात्रा में सब कुछ मिला है।"

## काव्य यात्रा

महादेवी की काव्य विकास यात्रा जिस बिंदु से प्रारंभ हुई वहीं उत्तरोत्तर रेखा के रूप में परिवर्तित होता गया है। प्रेम, करुणा, वेदना के भाव ही उनकी कृतियों में सघन से सघनतर होते गए। महादेवी जी के रचना संसार को समझने के लिए इनकी कविता की गहराई में पहुंचना आवश्यक है। वे सफल कवयित्री होने के साथ-साथ एक कुशल चित्रकार भी रहीं। प्रकृति का सौन्दर्य महादेवी के काव्य के लिए एक प्रमुख आकर्षण रहा है। उनकी कविता का श्रृंगार करने वाले प्रसाधनों में उनके बिम्बगत लालित्य का भी

महत्वपूर्ण स्थान है और कविता में बिम्ब ही काव्यात्मक कहे जा सकते हैं।

'नीहार' (1930) महादेवी वर्मा की प्रथम काव्य कृति है। यह गाँधी हिन्दी पुस्तक भंडार, प्रयाग ने प्रकाशित किया। इसकी भूमिका अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' ने लिखी। इसमें महादेवी जी की 1923 से 1929 तक लिखी 47 कविताएं संगृहीत हैं।

कैसे कहती हो सपना है, अलि! उस मूक मिलन की बात
भरे हुए अब तक फूलों में, मेरे आंसू उनके हास

यह प्रकृति का वह रूप है, जिसमें महादेवी ने अपने आँसू और प्रियतम का हास देखा है कवयित्री कहती हैं :

पर शेष नहीं होगी यह मेरे प्राणों की क्रीडा,
तुमको पीड़ा में ढूंढा तुम में ढूँढूगी पीड़ा !

'नीहार' की यह कौतुहलमय वेदना जिज्ञासा से मिली हुई है जैसे बच्चो में जिज्ञासा का भाव होता है वैसे ही उसके लिए बन जाती है ।

'निहार' में आत्मा और परमात्मा प्रकृति का पृथक्पृथक अस्तित्व था। एक और आत्मा और परमात्मा में द्वैत का निराकरण हुआ है। 'नीरजा' में आकर महादेवी सुख-दुःख में सामंजस्य ढूंढती हैं।

साँसें कहती अमर कहानी, पल-पल बनता अमित निशानी,
प्रिय ! मै लेती बांध मुक्ति, सौ-सौ लघुतम बंधन अपने में।

'रश्मि' (1932) महादेवी वर्मा का दूसरा काव्य संग्रह है। 'नीहार' की भटकती हुई कवयित्री 'रश्मि' में पाठ पा लेती है :

तुम मानस में बस जाओ,
छिप दुःख की अवगुंठन से
मैं तुम्हें ढूंढने के मिस
परिचित हो लूँ कण-कण से।

'नीरजा' के अंतर्गत प्रेमी हृदय प्रिय की सुधि में जहाँ जलना पसंद करता है वहाँ यह भी सोचता है कि पीर उसके रग-रग में भर जाय, प्रिय की पीर बड़ी मादक और आनंद प्रदान करने वाली होती है। 'नीरजा' का यह गीत उनकी कलात्मकता का उदाहरण है :

बीन भी हूँ मै तुम्हारी रागिनी भी हूँ!
नयन में जिसके जल्द वह तृषित चातक हूँ
शलभ जिसके प्राण में वह निठुर दीपक हूँ
फूल को उर में छिपाए विकल बुलबुल हूँ

जीवन में आत्मा और परमात्मा के लिए आकुल प्रणय निवेदन भी है, वहीं सांध्य गीत में सुख-दुःख के समन्वय को प्रकट किया गया है।

छिप आज चला मेरा अग-जग
छिप आज चला वह चित्रित मग
उतरो अब पलकों में पाहन
प्रिय सांध्य गीत गगन मेरा जीवन!

महादेवी वर्मा के काव्य में आशा-निराशा का मिला-जुला स्वर दिखाई देता है।

प्यास ही जीवन, सकूँ तृप्ति में मै जी कहां!
हे पपीहे पी कहां ?

'दीपशिखा' महादेवी की पाचवीं कृति है। इसमें 51 गीत संकलित हैं। 'दीपशिखा' कवि के मन का प्रतीक है। इसके जलने के पीछे किसी अज्ञात प्रिय का संकेत है, जो उसे असीम बल और विश्वास प्रदान करता है :

दुःखवती निर्माण उन्माद
यह अमरता नापते पद
बांध देंगे अंक संसृति
से तिमिर में स्वर्ण बेला।

परदुःखकातरता और अनंत विरह जो आस्था से मिल कर व्यापक भूमि पर प्रतिष्ठित है, भाषा

और भाव की दृष्टि से 'दीपशिखा' एक प्रौढ़ कृति है।

कहां से आये बादल काले ?
कजरारे मतवाले !
शूल भरा जग, धूल भरा नभ,
झुलसी देख दिशाए निष्प्रभ

जो स्थान महाकाव्यों में प्रसाद की 'कामायनी' एवं प्रबंधात्मक कविताओं में निराला जी की 'राम की शक्ति पूजा' को प्राप्त है, वही स्थान आधुनिक गीत काव्य में 'दीपशिखा' को प्राप्त है। इसके अलावा अनेक काव्य संकलन और गद्य भी प्रकाशित है।

## रहस्यवाद और प्रकृति

आधुनिक काल की कविता में रहस्यवाद शब्द महादेवी वर्मा के काव्य में पर्याय की तरह जुड़ गया। रहस्यवाद अदृश्य सत्ता की एक गहनतम वैयक्तिक अनुभूति है। यह आत्मा द्वारा परमात्मा का रसास्वादन है। कबीर हिंदी साहित्य में सवर्प्रथम रहस्यवादी कवि हैं। कबीर का रहस्यवाद हठयोग पर अवलंबित है कबीर के प्रियतम निर्गुण निराकार है आधुनिक कवियों में रहस्यवाद की सबसे अधिक और सबसे महत्त्वपूर्ण व्यंजना महादेवी वर्मा जी के काव्य में हुई है। उनकी प्रथम काव्य रचना 'नीहार' के प्रथम गीत से लेकर बाद तक प्रकाशित रचनाओं के अंतिम काव्य 'दीपशिखा' के अंतिम गीत तक में रहस्यानुभूति या दिव्य प्रणयानुभुती का रूप व्यक्त हुआ है। प्रकृति का अभिन्न अविचल सम्बन्ध होता है। प्रसाद, पन्त, निराला ने अनेक स्थलों पर प्रकृति को काव्य रचना के स्वतंत्र विषय के रूप में स्वीकार किया है। महादेवी वर्मा के काव्य का प्रकृति से गहरा सम्बन्ध है और अनादिकाल से प्रकृति मनुष्य को आकर्षित करती आई है। प्रकृति महादेवी के लिए श्रृंगार की वस्तु है, वह प्रिय की ओर संकेत करने वाली सहचरी है। एक कविता में वे संध्या से अपनी तुलना करती हैं :

प्रिय ! सांध्यगान मेरा जीवन,
विरह का जलजात जीवन

महादेवी ने अपने काव्य में प्रकृति को मानवीकरण के रूप में, प्रकृति प्रिय की प्रतीक्षा में, उपदेशिका के रूप में अद्वैतवाद और अनेक रूपों में व्यक्त किया है।

## निष्कर्ष

महादेवी वर्मा हिंदी साहित्य में एक विशिष्ट स्थान रखती है। उन्होंने हिंदी काव्य में रहस्यवाद की परंपरा को न केवल जीवित रखा वरन उसे आगे भी बढ़ाया है। वेदना की रानी महादेवी का काव्य प्रणय और तज्जनित वेदना का सौन्दर्य लिए हुए है। महादेवी छायावाद की सृष्टी है। उनके काव्य में भारतीय संस्कृति के अधिकांश प्रमुख तत्व मिल जाते हैं, जिनके आधार पर उन्हें सांस्कृतिक बोध की कवयित्री कहा जा सकता है। महादेवी के गीतों में बादल, दीपक, फूल और सरिता भी लोकमंगल की भावना से परिपूर्ण दिखलाये गए हैं :

प्यासे का जान ग्राम, झुलसे का पूछ नाम,
धरती के चरणों पर नभ के घर शत प्रणाम
गल गया तुषार-भार बनकर वह छवि शरीर

महादेवी वर्मा की वेदना प्रियता उनके समस्त काव्य में विद्यमान है। वे वेदना से शुरू करके वेदना में ही अपनी परिणति खोजती दिखाई देती हैं। महादेवी के काव्य में प्रकृति का चित्रण भी आराध्य के प्रति अद्वैत भाव या तदरूपता के धरातल पर ही हुआ है। उनके काव्य में प्रकृति को उपदेशिका के रूप में भी देखा जा सकता है। आधुनिक हिंदी साहित्य कविता में अपना महत्त्वपूर्ण स्थान बनाने वाली तथा सत्याग्रह

आन्दोलन के दौरान कवि सम्मलेन में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाली महादेवी वर्मा ऐसी कवयित्री हैं जिन्होंने भारत के गुलामी और आजादी के दिन देखकर साहित्यिक रचनाएं कीं।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1 वर्मा महादेवी, जो तुम आ जाते एक बार, कविता

2 शर्मा डॉ.हरिचरण, छायावाद के आधार स्तम्भ, राजस्थान प्रकाशन, जयपुर

3 सिंह चंपा, महादेवी के काव्य में प्राकृतिक बिम्ब एवं कलात्मकता के विविध आयाम, सत्यम पब्लिकेशन हाउस, नई दिल्ली

4 चतुवेदी डॉ.रामस्वरूप, महादेवी : प्रतिनिधि गद्य रचनाएँ, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली

5 नगेन्द्र, डॉ. हरदयाल, हिंदी साहित्य का इतिहास

6 वर्मा महादेवी, सन्धिनी

7 वर्मा महादेवी, दीपशिखा

8 कविता कोश

9https://bharatdiscovery.org

10https://www.dilsedeshi.com/biography/mahadevi-verma-biography-in-hindi/

11 odhpurnationaluniversity.com